स्रोत विधि
(Source Method)

स्रोत विधि से अभिप्राय अतीत को प्रत्यक्ष रूप देने वाली उन सभी सामग्री से है, जो ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होती हैं, क्योंकि ज्ञानार्जन की क्रिया में प्रत्यक्ष अनुभव का बहुत महत्त्व होता है। हम किसी वस्तु को प्रत्यक्ष रूप से देखकर या कार्य करके जितना ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, उतना ज्ञान उस वस्तु या कार्य के विषय में पढ़कर प्राप्त नहीं कर सकते हैं। किसी पर्वत, कारखानों, स्मारक इत्यादि के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए उनके विषय में पढ़ने अथवा सुनने की अपेक्षा उन्हें व्यक्तिगत रूप से जाकर देखने से अधिक जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार से किसी दूसरे द्वारा बताए गए अनुभवों की अपेक्षा स्वयं प्राप्त अनुभव सदैव लाभप्रद एवं महत्त्वपूर्ण होते हैं। प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से वर्तमान को स्पष्ट किया जाता है। ये अनुभव अतीत को स्पष्ट करने में सहायक नहीं होते, क्योंकि अतीत इस समय मौजूद नहीं होता। उदाहरण के लिए, यदि हम गुप्त सम्राटों के विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अप्रत्यक्ष ज्ञान का सहारा लेना पड़ेगा, क्योंकि न तो इस समय गुप्त सम्राट मौजूद हैं और न ही हमने उनको देखा है, परन्तु इस अप्रत्यक्ष ज्ञान को विभिन्न युक्तियों के माध्यम से प्रत्यक्ष बनाया जा सकता है। इन युक्तियों में स्रोत का प्रमुख स्थान है। गुप्त सम्राटों के ताम्र-पत्रों, मूर्तियों, खण्डरों, स्तम्भों, अभिलेखों आदि के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता है; अत: हम कह सकते हैं कि इस विधि के माध्यम से अतीत को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

अनेक प्रकार के मूल स्रोत
(Various Kinds of Original Sources)

मूल स्रोत निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–

1. भौतिक स्रोत (Physical Sources) : इसके अन्तर्गत स्मारक, प्रतिमा, अस्त्र-शस्त्र, मूर्ति, भग्नावशेष, स्तम्भ, नदी, समुद्र, पर्वत, प्राचीन सिक्के आदि आते हैं।

2. मौखिक स्रोत (Oral Sources) : इसके अन्तर्गत लोकगीत, दन्त-कथाएँ, कहानियाँ, रीति-रिवाज परम्पराएँ आदि आते हैं।

3. लिखित या मुद्रित स्रोत (Written or Printed Sources) : इसके अन्तर्गत प्राचीन ग्रन्थ, डायरी, हस्तलिपियाँ, नियमावली, पत्र-पत्रिकाएँ आदि आते हैं।

स्रोत विधि का प्रयोग
(Application of Source Method)

स्रोत विधि का ज्ञान प्राप्ति में विशेष महत्त्व है। इसके प्रयोग से विद्यार्थियों की तर्क-शक्ति का विकास होता है। इस विधि के प्रयोग से ज्ञान में सजीवता आती है और विद्यार्थियों को अन्वेषण एवं परीक्षण की आदत पड़ती है। ऐसे में शिक्षक का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों को उपयोगी सामग्री से परिचित कराए तथा उसका विवरण प्रस्तुत करे। शिक्षण निम्नलिखित प्रकार से ऐसा कर सकता है–

1. प्रदर्शन (Demonstration) : शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों के समक्ष मूल स्रोतों का प्रदर्शन करके उनकी उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है। शिक्षक को चाहिए कि वह मूल स्रोतों का प्रदर्शन उचित समय पर ही करे।

2. प्रदत्त अध्ययन (Assigned Reading) : शिक्षक मूल स्रोतों का प्रयोग करते समय छात्रों को कुछ विशिष्ट अनुच्छेदों के अध्ययन का उत्तरदायित्व दे सकता है, परन्तु ये सभी अनुच्छेद रोचक एवं विषय से सम्बन्धित होने चाहिए।

3. समस्या-समाधान (Problem Solving) : समस्या के समाधान में मूल स्रोत भी सहायक होते हैं। मूल स्रोतों की सहायता से ही विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तक या किसी अन्य सामग्री में विद्यमान अशुद्धि को ठीक करने के योग्य हो जाते हैं।

मूल स्रोतों के प्रयोग में कठिनाइयाँ
(Difficulties in Application of Original Resources)

1. उपलब्धि में : ऐसे मूल स्रोत, जो वास्तविक रूप से महत्त्वपूर्ण हैं तथा छात्रों के अनुकूल हैं या फिर अनेक स्थानों पर बिखरे पड़े हैं, वे उपलब्ध कराना कठिनाई है। दूसरे शब्दों में, इन स्रोतों को उपलब्ध कर विद्यालय के छात्रों के लिए एकीकृत करना कठिन कार्य है।

2. भाषा में : मूल स्रोतों के प्रयोग में छात्रों के समक्ष भाषा सम्बन्धी कठिनाई भी आती है। विभिन्न स्रोत अनेक भाषाओं में उपलब्ध होते हैं और यह सम्भव नहीं होता कि छात्र सभी भाषाओं की जानकारी प्राप्त कर सकें।

3. एक ही समय के लेखकों के विरोधी मत : स्रोतों के प्रयोग में छात्रों के समक्ष एक ही समय के लेखकों के विरोधी मतों के कारण असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि कोई भी लेखक अपने समय की घटनाओं का वर्णन अपने दृष्टिकोण के अनुसार अलग-अलग करता है।

स्रोत विधि के गुण
(Merits of Surce Method)

इस विधि के प्रमुख गुण इस प्रकर से हैं—

(i) इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों में प्रामाणिक तथ्यों को पहचानने की क्षमता का विकास होता है। इस प्रकार से विद्यार्थी अन्य कही गई बातों में विश्वास न करके केवल प्रामाणिक सामग्री ही एकत्र करने का प्रयास करते हैं।

(ii) इस विधि के प्रयोग से पिछड़े हुए विद्यार्थी भी मूल स्रोत के प्रयोग से विषय में रुचि लेना प्रारम्भ कर देते हैं। इसके प्रयोग से उन विद्यार्थियों की जिज्ञासा जागृत होती है, रचनात्मक व सृजनात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा मिलती है तथा उनके कौशल को विकसित किया जा सकता है।

(iii) इस विधि के द्वारा विद्यार्थियों में वास्तविकता को पहचानने की शक्ति का विकास होता है। यह विद्यार्थियों को परीक्षण, तुलना एवं विश्लेषण करने का प्रशिक्षण प्रदान करती है।

(iv) इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों की तर्क-रीति का विकास होता है और चिन्तन को उचित मार्ग मिलता है।

(v) इस विधि के प्रयोग से ज्ञान में सजीवता आती है तथा विद्यार्थियों को अन्वेषण एवं परीक्षण की आदत पड़ती है।

(vi) इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थी शिक्षक के निर्देशन में स्वयं अन्वेषण करके निष्कर्ष निकालते हैं।

स्रोत विधि के दोष
(Demerits of Surce Method)

इस विधि के प्रमुख दोष इस प्रकार से हैं—

(i) इस विधि का प्रयोग केवल उच्च कक्षाओं में अनुभवहीन विद्यार्थियों द्वारा सम्भव है। यह विधि निम्न कक्षाओं में सम्भव नहीं है।

(ii) इस विधि के प्रयोग में विद्यार्थियों को भाषा सम्बन्धी कठिनाई आती है और विद्यार्थी इस कठिनाई के कारण इसका उपयोग नहीं कर पाता, क्योंकि उसको सभी भाषाओं की जानकारी नहीं होती।

(iii) इस विधि के प्रयोग करने में सबसे बड़ी समस्या ऐसी स्रोत पुस्तकों का अभाव है, जिनमें सभी स्रोतों का संकलन हो तथा वे विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त हों।